OM-4- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 26/04/2021 1:55 PM Page 8

वारंगल-आ.प्र.। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सविता, बिज़नेसमैन कसम नमःशिवाय, कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ. अविनाश, पुलिस सब इंस्पेक्टर रामा राव तथा अन्य।

दिल्ली-मोहम्मदपुर। 85वीं महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित 'शिव संदेश शोभा यात्रा' का शुभारंभ करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कंचन बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

नई दिल्ली-पालम। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के साथ जीवन में दिव्य गुणों की धारणा की प्रतिज्ञा कराते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज बहन। उपस्थित हैं पूर्व विधायक धर्मदेव सोलंकी, दक्षिण दिल्ली नगर निगम स्थायी समिति के अध्यक्ष भूपेन्द्र गुप्ता, निगम पार्षद श्रीमति इन्द्र कौर, ब्र.कु. सारिका,हरिनगर तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

फर्रुखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. वंदना सिंह, राजपूत रेजीमेंट के कर्नल सर्वेश सिंह यादव, कार्यक्रम अध्यक्षा डॉ. अनीता यादव, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू बहन, सुरेश गोयल तथा अन्य।

पटियाला-पंजाब। दादी हृदयमोहिनी जी एवं दादी जानकी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मोहित महिन्द्रा,जनरल सेक्रेट्री,कांग्रेस यूथ पंजाब, ब्र.कु. शांता दीदी, ब्र.कु. कैलाश दीदी, ब्र.कु. राखी तथा अन्य।

राजकोट-रविरत्नापार्क। दादी हृदयमोहिनी जी एवं दादी जानकी जी के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. रेखा बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन।

कथा सरिता

आत्म मूल्यांकन

एक बार एक व्यक्ति कुछ पैसे निकलवाने के लिए बैंक में गया। जैसे ही कैशियर ने पेमेंट दी तो कस्टमर ने चुपचाप उसे अपने बैग में रखा और चल दिया। उसने एक लाख चालीस हज़ार रूपए देने के बजाय एक लाख साठ हज़ार रूपए उसे दे दिए, लेकिन उसने ये आभास कराते हुए कि उसने पैसे गिने ही नहीं और कैशियर की ईमानदारी पर उसे पूरा भरोसा है चुपचाप पैसे रख लिए।

इसमें उसका कोई दोष नहीं था। लेकिन वो अतिरिक्त पैसे बैग में रखते हुए उसके मन में उधेड़-बुन शुरु हो गई। एक बार उसके मन में आया कि फालतू पैसे वापस लौटा दे लेकिन दूसरे ही पल उसने सोचा कि जब मैं गलती से किसी को अधिक पेमेंट कर देता हूँ तो मुझे कौन लौटाने आता है!

बार-बार मन में आया कि पैसे लौटा दे। लेकिन हर बार दिमाग कोई न कोई बहाना या कोई न कोई वजह दे देता पैसे न लौटाने की। लेकिन इंसान के अन्दर सिर्फ दिमाग ही तो नहीं होता, दिल और अंतरात्मा भी तो होती है। रह-रह कर उसके अंदर से आवाज़ आ रही थी कि तुम किसी की गलती से फायदा उठाने से नहीं चूकते और ऊपर से बेईमान न होने का ढोंग भी करते हो। क्या यही ईमानदारी है?

उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। अचानक ही उसने बैग में से बीस हज़ार रुपए निकाले और जेब में डालकर बैंक की ओर चल दिया।

उसकी बेचैनी और तनाव कम होने लगा था। वह हल्का और स्वस्थ अनुभव कर रहा था। वह कोई बीमार थोड़े ही था, लेकिन उसे लग रहा था जैसे उसे किसी बीमारी से मुक्ति मिल गई हो। उसके चेहरे पर किसी जंग को जीतने जैसी प्रसन्नता व्याप्त थी।

रुपए पाकर कैशियर ने चैन की सांस ली। उसने कस्टमर को अपनी जेब से एक हज़ार रुपए निकालकर उसे देते हुए कहा, "भाई साहब आपका बहुत-बहुत आभार! आज मेरी तरफ से बच्चों के लिए मिठाई ले जाना, प्लीज़ मना मत करना।"

"भाई आभारी तो मैं हूँ आपका और आज मिठाई भी मैं ही आप सबको खिलाऊंगा" - कस्टमर बोला।

कैशियर ने पूछा, "भाई आप किस बात का आभार प्रकट कर रहे हैं और किस खुशी में मिठाई खिला रहे हैं?"

कस्टमर ने जवाब दिया -"आभार इस बात का कि बीस हज़ार के चक्कर में मुझे आत्म मूल्यांकन का अवसर प्रदान किया। आपसे ये गलती नहीं होती तो, न तो मैं द्वंद्व में फंसता और न ही उससे निकल कर अपनी लोभवृत्ति पर काबू पाता। यह बहुत मुश्किल काम था। घंटो के द्वंद्व के बाद ही मैं जीत पाया। इस दुर्लभ अवसर के लिए आपका आभार।"

ईमानदारी का कोई पुरस्कार नहीं होता अपितु ईमानदारी स्वयं में एक बहुत बड़ा पुरस्कार है।

भार और धर्म

एक समय की बात है, एक गांव में एक धार्मिक व्यक्ति(साधु) रहता था। कई लोग उसे सिद्ध संत मानते थे और कई उसको असामान्य तथा पागल समझते थे। बच्चे उसे खिलौना बाबा कहते थे क्योंकि वह उनको खिलौने और मिठाईयां देता था। एक उत्तम भिक्षुक की भान्ति वह उतना ही दान लेता था, जितना उसे एक दिन के लिए चाहिए होता था। वह कृतज्ञता से सब स्वीकार कर लेता था। चाहे वह वस्तु चावल हो, रोटी या सब्जी। उसने न तो कभी धन मांगा तथा न ही कभी स्वीकार किया। वह संतुष्ट लगता था। किन्तु वह भोजन के साथ खिलौने और मिठाईयां भी देते थे। वह भिक्षुक उन सारी चीजों को एक बड़े थैले में डाल देता और गांव के बच्चों में बांट देता था।

वह सबके साथ उदारता का व्यवहार करता था और उसकी उपस्थिति में एक दिव्यता झलकती थी। परन्तु अब तक यह कोई नहीं समझ पाया था कि अगर वो इतना ज्ञानी है तो इतना बड़ा झोला लेकर क्यों घूमता है! कुछ लोग हैरान थे कि अगर वो इतना ही आत्म ज्ञानी है तो वो गन्दे कपड़ों में, भारी थैला उठाये, एक परिश्रमी जैसे, खिलौनों को बच्चों में बांटने के लिए क्यों मारा-मारा फिरता है बजाए इसके कि वो कुछ उपदेश दे, अच्छाई को बढ़ावा दे, पवित्र श्लोकों को बोले।

एक दिन करीब चालीस की आयु वाले कुछ व्यक्तियों के समूह ने, जो कि बरगद के पेड़ के नीचे बैठ कर ताश खेल रहे थे। जा रहे साधु को रोक लिया और व्यंग्य करते हुए उससे कहा, "कृपया हमें भी कुछ ज्ञान प्राप्त करायें ताकि हमें भी आत्मा का कुछ बोध हो। हमें यकीन है कि आपके इस बड़े से झोले में अवश्य ही वेद होंगे।"

साधु ने अपना थैला ज़मीन पर गिरा दिया। "यही है" उसने कहा, "यही आत्मा का बोध है। अब मैंने आपको समस्त वेदों का सार बतला दिया है।"

उन युवकों ने सोचा कि उनका उस साधु को पागल समझने का शक बिल्कुल सही निकला। परन्तु उनमें से एक आदमी बुद्धिमान था। उसने कहा, "इसका क्या मतलब है? एक थैले के गिरने से सारे वेदों के सार का क्या अभिप्राय है?"

साधु बोला, "यह थैला जिसे मैं उठाये जा रहा हूँ, एक बहुत बड़ा भार है। अब मैंने इसे गिरा दिया, अब मैं स्वतंत्र हूँ। सब कुछ यही है, आप भी अपना थैला गिरा दो। व्यर्थ के भार को उठाकर मत जियो।"

समूह उसके लिए श्रद्धा से पूर्ण हो गया और उनमें से एक बोला, "अगर सब कुछ यही है तो फिर अगला चरण क्या है?"

साधु ने अपना झोला फिर से उठाया और उसे कन्धे पर संभालते हुए बोला, "मैं कोई भार नहीं ले जा रहा। मैं तो केवल बच्चों के लिए खिलौनों से भरा थैला ले जा रहा हूँ। मेरे पास उनकी खुशी तथा आनन्द का सामान है।"

"यह आपकी जागरूकता और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि आप इसको भार मानते हैं अथवा अपना धर्म।" यह कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

भावनाओं की कोई व्याख्या नहीं होती और उनको प्रत्यक्ष रूप देना तो और भी कठिन है। अपनी नकारात्मक भावनाओं को खत्म कर दो। अपनी चिन्ताओं से भरे थैले(मन) को खाली कर दो। अपने आप को पहचानें और स्वतन्त्र स्वरूप में जियें।

जयपुर-जादौन। होली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अमृता,लंदन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सनुसुईया, ब्र.कु. महिपाल भाई तथा अन्य भाई-बहनें।

इंदौर-गंगोत्री विहार। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे समाजसेवी एवं व्यवसायी राजेन्द्र मित्तल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य।